पद १९३

(राग: झिंजोटी - ताल: दीपचंदी)

सखे ग आण त्या हरिला। न ये कां गुंतला कोठें। तयाविण जीव तळमळतो। पडेना चैन मज कोठें।।ध्रु.।। कोण्या सवतीच्या गृहामध्यें बसला। तिच्या मोहामध्यें फसला। न जाणों मजवरी रुसला।।१।। पलंगी एकटी निजल्यें। मदन दाहानें गजबजल्यें। झुरझुरोनी मनी थिजल्यें।।२।। कुचद्रय फार तटतटले। बंद कंचुकीचें फिटले। शरीरामाजीं द्रव सुटले।।३।। आतां मी काय करूं बाई। तडकती छाती आणि बाही। जाउनि श्रीहरि आणा

बाई ।।४।। सखा माणिकप्रभु दावा। मूर्ति ती हृदयीं कोंदावा। फिटेल मग विरहाचा दावा।।५।।